चल भोले के गाँव | By Kumar Narendra & Sanjay Pareek |

मिथ्या जगत को तजते प्राणी
मत कर सोच विचार
शिव चरणों में मुक्ति तेरी
चा रे शिव के द्वार

भाव भक्ति ह्रदय में जगाकर
चल रे दीवाने शिव के धाम
श्रावण में शिव दर्शन पल सम
दर्शन चारों धाम
चल रे चल भोले के गाँव
गौरा माँ ममता की छाँव

श्रावण माह पावन पवित्र
भोले के मन को भाता है
शिव की कृपा का पात्र वो प्राणी
कांवड़ ले जो जाता है

कांवड़ एक हजार वर्षों की
पूजा का परिणाम
चल रे चल भोले के गाँव
गौरा माँ ममता की छाँव

ममतामयी माँ पार्वती
भोले समान ही भोली है
एक कलश गंगाजल से माँ
भक्तों की ही हो ली है

आडंबर यहाँ टिक न सके यहाँ
भक्ति भाव विधान
चल रे चल भोले के गाँव
गौरा माँ ममता की छाँव

भाव भक्ति ह्रदय में जगाकर
चल रे दीवाने शिव के धाम
श्रावण में शिव दर्शन पल सम
दर्शन चारों धाम
चल रे चल भोले के गाँव
गौरा माँ ममता की छाँव

चलते जाओ मत देखो
अपने चालों और पाँव को
शिव के द्वारे जाना है तो
देखो मन के भाव को

कहे कुमार स्वच्छ भाव से
मार्ग होता आसान
चल रे चल भोले के गाँव
गौरा माँ ममता की छाँव

भाव भक्ति हृदय में जगाकर
चल रे दीवाने शिव के धाम
श्रावण में शिव दर्शन पल सम
दर्शन चारों धाम
चल रे चल भोले के गाँव
गौरा माँ ममता की छाँव

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%9a%e0%a4%b2-%e0%a4%ad%e0%a5%8b%e0%a4%b2%e0%a5%87-%e0%a4%95%e0%a5%87-%e0%a4%97%e0%a4%be%e0%a4%81%e0%a4%b5-by-kumar-narendra-sanjay-pareek/